DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-8,
PSYCHOLOGY OF HEALTH BEHAVIOUR
LECTURE-68

स्वास्थ्य व्यवहार के क्षेत्र में किये गये अध्ययनों में तीन महत्वपूर्ण कारकों की अहम भूमिका है –

(2) चितवृति कारक (DISPOSITIONAL FACTORS)-मनोवैज्ञानिको द्वारा किये गए शोध अध्ययन से यह पता लगाने की कोशिश की गयी है की विभिन्न रोगों की रोगियों में किस तरह के व्यक्तित्व शील गुण सहचार्चित होते है |हुसैन,मुरुगप्पन तथा थिरुनानुक्कारासू (1992) ने एच०आई०भी० घनात्मक (HIV POSITIVE) रोगियों की तुलना एच०आई०भी० ऋणात्मक रोगियों में किया और पाया की एच०आई०भी० रोगियों
मेंचिंता,विषाद,स्नायुविकृति(NEUROTICISM),मद्यपानता,दोषभाव

आत्म हत्या से संबर्ध विचार आदि एच०आई०बी० ऋणात्मक रोगियों कि तुलना में अधिक थे |इसी तरह से वैध श्रीवास्तव एवं श्रीवास्तव (1985) ने कैंसर रोगियों को हाइपरटेंसन रोगियों के साथ तथा दो नियंत्रित समूहों जो आयु ,यौन एवं शिक्षा पर आधारित थे , तुलना किया और पाया की कैंसर तथा हाइपोटेंसन रोगियों द्वारा सामान्य प्रयोज्यो या नियंत्रित प्रयोज्यो की तुलना में स्नायुविकृत प्रवृतियाँ अधिक थी |इन अध्ययनों से यह स्पष्ट है की विकृत स्वास्थ्य व्यवहार के साथ कुछ व्यक्तित्व कारक सहचर्चित होते है |

(3) स्वास्थ्य जोखिम व्यवहार (HEALTH RISK BEHAVIOUR)स्वास्थ्य जोखिम व्यवहार से तात्पर्य वैसे व्यवहार से होता है जिसे व्यक्ति प्राय: आदतन अपने जीवन में करता है परन्तु उससे उसे कोई बिमारी होने का जोखिम बढ़ जाता है |टेलर (1991) ने अपने अध्ययन में पाया की धुम्रपान एक ऐसा व्यवहार पैटर्न है जिसे कैंसर एवं ह्रदय रोग के होने की संभावना काफी बढ़ जाती है | इनका दावा था की इन रोगियों से होने वाले मृत्यु का करीब 25 प्रतिशत केसेज को धुम्रपान की आदत को छुड़ा कर बचाया जा सकता है इसके अतिरिक्त कुछ अध्ययनों में मद्यपानता तथा औषध व्यसन(DRUG ATDICTION) को भी प्रमुख जोखिम कारक माना गया है |

पी०गुप्ता एवं नवला 1986 ने हेरोईन व्यसनी की तुलना कॉलेज के ऐसे छात्रो से किया जिसने किसी प्रकार का कोई व्यसन की आदत नहीं थी | परिणाम में देखा गया की हेरोईन व्यसनी को अपने माता-पिता के साथ सम्बन्धनात्मक समस्याएँ थी तथा यहाँ तक की वे अपने आत्म संप्रत्यय के साथ भी ठीक ढंग से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाते थे |हेरोईन व्यासनी का प्राप्तांक डर दोषभाव आदि के माप पर तुलनात्मक रूप से अधिक था तथा आत्म संप्रत्यय की माप पर निम्न था |अव्यसनी छात्र वैसे परिवार से आते थे जिनमे स्पष्टता तथा धार्मिकता का गुण तुलनात्मक रूप से अधिक था|

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है की मनोवैज्ञानिको द्वारा किये गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हो जाता है की स्वस्थ व्यवहार चाहे उसका सम्बन्ध मानसिक बिमारी से हो या दैहिक बिमारी से हो ,निश्चित रूप से कुछ कारको जैसे जीवन आसेधक चित्रवृति तथा स्वास्थ्य जोखिम कारक आदि से प्रभावित होते है |